जैनन्याय को आचार्य प्रभाचन्द्र का योगदान

Jain Nyay Ko Acharya Prabhachandra Ka Yogdan

डॉ. योगेश कुमार जैन

Scanned by CamScanner

"पक्षपातो न में वीरे न द्वेशः कपिलादिषु।
युक्तिमद्वचनं यस्य तस्य कार्यः परिग्रहः।।"

लोकतत्त्व निश्चय, श्लोक ३८।

"अनन्तधर्मणस्तत्त्वं पश्यंती प्रत्यगात्मनः।
अनेकांतमयी मूर्तिर्नित्यमेव प्रकाशताम्।।"

समयसार, आत्मख्याति टीका, श्लोक ०२।

जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूँ-राजस्थान

ISBN : 978-93-83634-18-7

Scanned by CamScanner